केंद्रीय हिंदी संस्थान, आगरा

(शिक्षा मंत्रालय,भारत सरकार)

अंतरराष्ट्रीय हिंदी शिक्षण विभाग

द्वारा
आयोजित
दो दिवसीय अंतरराष्ट्रीय संगोष्ठी

गिरमिटिया प्रवासी हिंदी साहित्य: दशा और दिशा

तिथि : 20-21 फरवरी, 2025

स्थल :
अटलबिहारी बाजपेयी अंतरराष्ट्रीय सभागार,
केंद्रीय हिंदी संस्थान, आगरा

संगोष्ठी की भूमिका :

19वीं शताब्दी में ब्रिटिश उपनिवेशवादी शासकों ने शर्तबंदी (एग्रीमेंट) प्रथा के अंतर्गत भारतीय मजदूरों को विश्व के अनेक देशों में भेजा जिनमें मारीशस,त्रिनिदाद एवं टोबैगो, सूरीनाम, फ़िजी, गुयाना, दक्षिण अफ्रीका आदि प्रमुख हैं। इन मजदूरों के लिए 'गिरमिटिया' शब्द का प्रयोग किया गया जो 'एग्रीमेंट' का ही बिगड़ा हुआ रूप है। भारतीय मजदूर मूलत: बिहार, पूर्वी उत्तर प्रदेश, दक्षिण भारत एवं महाराष्ट्र से थे। इनमें से कुछ अपने साथ रामचरितमानस, हनुमान चालीसा, आल्हा, सत्यनारायण कथा, गीता, महाभारत आदि के साथ-साथ अपनी भाषा,साहित्य और संस्कृति भी ले गए इससे वैश्विक स्तर पर भारतीय भाषा, साहित्य और संस्कृति का प्रसार हुआ। प्रवासी भारतीय जिन्हें 'गिरमिटिया' कहा जाता है, उन्हें अपना प्रवासन कठिन परिस्थितियों में व्यतीत करना पड़ा था। यंत्रणा, यातना, दुख-पीड़ा और संघर्षों के झलक प्रवासी गिरमिटियाओं द्वारा सृजित हिंदी साहित्य में देखने को मिलती है।

गिरमिटिया देशों और अन्य देशों में सामाजिक-धार्मिक उत्थान एवं जन-कल्याण के उद्देश्य से समाज सेवक, धर्मोपदेशक, विचारक आदि पहुँचे और उन मजदूरों के उत्थान के लिए सनातन धर्म सभा, आर्य सभा आदि जैसे कई संगठनों के के माध्यम से वहाँ भाषा- संस्कृति का संवर्धन किया जो आगे उन देशों के विकास में भारतीयों के योगदान से संबद्ध हो गए। समय के साथ साधन, शिक्षा, ज्ञान-विज्ञान का प्रसार हुआ और भारतीय लोग शिक्षा, नौकरी, व्यवसाय आदि उपक्रमों के माध्यम से विदेशों की यात्रा करने लगे और उन सभी ने हिंदी-भाषा और संस्कृति के प्रचार-प्रसार में योगदान दिया। यह प्रक्रिया आज भी निरंतर चल रही है।

संगोष्ठी का उद्देश्य :

भारत से बाहर समृद्ध हिंदी साहित्य का सृजन हो रहा है और जब हम गिरमिटिया देशों में हिंदी की बात करते हैं तो पाते हैं कि इन देशों में हिंदी के प्रति लोगों में व्याप्त सम्मान और आदर का भाव अनोखा है। जो अन्यत्र देखने को नहीं मिलता। सभी गिरमिटिया देशों में हिंदी का सृजनात्मक साहित्य बड़े पैमाने पर बिखरा पड़ा है। आवश्कता है कि वहाँ के सृजनात्मक हिंदी-लेखन को हिंदी साहित्येतिहास में शामिल कर उसका सम्यक मूल्यांकन किया जाए। इसी बहाने हिंदी भाषा को समृद्ध करने में गिरमिटिया प्रवासियों और उनके वंशजों के समर्पण और साहस को भी हम उचित सम्मान दे पाएँगे। यही इस संगोष्ठी का महत उद्देश्य है।

संपर्क सूत्र:

Email-khs.seminar@gmail.com

संयोजक
डॉ.पुरुषोत्तम पाटील
सहायक प्रोफ़ेसर
अंतरराष्ट्रीय हिंदी शिक्षण विभाग
+91-9326203277

गिरमिटिया प्रवासी हिंदी साहित्य: दशा और दिशा

उप-विषय:

- समकालीन गिरमिटिया प्रवासी हिंदी साहित्य की स्थिति
- गिरमिटिया प्रवासी हिंदी साहित्य में अध्ययन एवं शोध की स्थिति और संभावनाएँ: भारतीय परिदृश्य में
- गिरमिटिया प्रवासी हिंदी साहित्य में राष्ट्र प्रेम
- गिरमिटिया प्रवासी हिंदी साहित्य में नारी चित्रण
- गिरमिटिया प्रवासी हिंदी साहित्य में कुटुंब व्यवस्था का चित्रण
- गिरमिटिया प्रवासी हिंदी साहित्य में भारतीय संस्कृति का चित्रण
- गिरमिटिया प्रवासी हिंदी साहित्य में मानवीय संबंध
- गिरमिटिया प्रवासी हिंदी साहित्य में जिजीविषा
- गिरमिटिया प्रवासी हिंदी साहित्य और सनातन मूल्य
- गिरमिटिया साहित्य का कथ्य
- मुख्य विषय से संबंधित अन्य उप विषय

सहभागिता हेतु दिशा निर्देश :

- संगोष्ठी में संकाय सदस्य, हिंदी विद्वान एवं शोधार्थी सहभागी हो सकते हैं।
- सहभागिता हेतु इच्छुक अपने शोध-आलेख दिनांक **20** जनवरी, **2025** तक ई-मेल: **khs.seminar@gmail.com** पर अवश्य भेज दें। शब्द सीमा 1500 से 2000 होगी।
- पंजीकरण हेतु गूगल लिंक (https://forms.gle/ffFKjn8hqnCdVtpn6) या QR चिन्ह का उपयोग करें।
- प्राप्त शोध आलेखों को समीक्षा समिति के अनुमोदन के बाद ही स्वीकार किया जाएगा।
- समिति द्वारा चयनित शोध आलेख संस्थान की केयर सूची बद्ध पत्रिका में प्रकाशित किए जाएँगे।
- चयनित सहभागियों को अपने आलेख की मूल प्रति संगोष्टी आरंभ होने से पूर्व आयोजकों को सौंपनी होगी।
- सभी सहभागियों को सहभागिता प्रमाण पत्र दिए जाएँगे।
- चयनित शोध आलेख वाचकों को संस्थान के नियमानुसार मानेदय का भुगतान किया जाएगा।
- संगोष्ठी में सहभागिता हेतु किसी प्रकार का पंजीकरण शुल्क नहीं है।
- आलेख की मौलिकता एवं अप्रकाशित होने का प्रमाणपत्र संलग्न करना अनिवार्य है।

आयोजन समिति

मुख्य संरक्षक
प्रो.सुरेंद्र दुबे
माननीय उपाध्यक्ष
केंद्रीय हिंदी शिक्षण मंडल,आगरा

संरक्षक
प्रो.सुनील बाबुराव कुलकर्णी
माननीय निदेशक
केंद्रीय हिंदी संस्थान,आगरा

सलाहकार
प्रो.हरिशंकर
शैक्षिक समन्वयक
केंद्रीय हिंदी संस्थान,आगरा

आयोजक
डॉ.जोगेन्द्र सिंह मीणा
विभागाध्यक्ष
अंतरराष्ट्रीय हिंदी शिक्षण विभाग

संयोजक
डॉ.पुरुषोत्तम पाटील
सहायक प्रोफ़ेसर
अंतरराष्ट्रीय हिंदी शिक्षण विभाग

सह-संयोजक
डॉ.रेणु चौधरी
सहायक प्रोफ़ेसर
अंतरराष्ट्रीय हिंदी शिक्षण विभाग

पंजीकरण हेतु